The Jute Commissioner, in exercise of the powers conferred as per section 3(3) of Jute and Jute Textiles Orders 2000, fixes the prices of jute bags with the linkage of raw jute to support the farmers to give minimum statutory price. The price fixed by the Jute Commissioner is against compulsory linkage of raw jute. Awarding orders to private tenders lead to corruption and unhealthy competition. Haryana suffered heavily due to late supplies and bad quality. JCI has sought explanation from the Haryana and Chhattisgarh Governments, which have flouted his notification. The market price was much lower than the JCI rate with no linkage of compulsory purchase jute. This tender process is affecting the quality of bags, which is creating unhealthy competition and encouraging corruption.

Hence I urge upon the Government to ensure that all States follow the official guidelines of the Jute Commissioner for the purchase of jute bags. Thank you, Sir.

Demand for celebration of Munshi Premchand's Birth Anniversary

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): उपसभाध्यक्ष जी, जिस नाम पर विपक्ष की माननीया सदस्या सुषमा जी को आपत्ति थी, उसी नाम को मैं फिर उच्चरित करना चाहती हूं। मैं समझती हूं कि जिंदगी भर मैं उनका नाम उच्चरित करूं तो भी उनसे उऋण नहीं हो सकती।

31 जुलाई, 2004 का दिन हिंदी और उर्दू के उपन्यास सम्राट, महान विचारक और समाज सुधारक मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयंती का दिन है। प्रेमचंद सिर्फ भारतीय साहित्य में ही नहीं, विश्व साहित्य में भी एक शीर्ष स्थान रखते हैं और गोर्की तथा लु-शून की तरह के कथाकारों के समकक्ष माने जाते हैं। महात्मा गांधी ने प्रेमचंद के साहित्य को भारत के स्वतंत्रता संग्राम की जीवित इतिहास कहा था। रवीन्द्रनाथ ने प्रेमचंद को भारत का एक अनमोल रतन बताया था। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यदि किसी एक शख्स ने हमारे देश के मजदूरों, किसानों और मेहनतकश जनता की तरफ से हस्तक्षेप किया था तो वे मुंशी प्रेमचंद ही थे। प्रेमचंद ने विश्व मानवतावादी दृष्टि अर्जित की थी। वे हर प्रकार के सामाजिक अन्याय, विषमता और भेदभाव के विरुद्ध थे तथा खुद को उन्होंने बोल्शेविक उसूलों का कायल तक कहा था। 1936 में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के स्थापना सम्मेलन की अध्यक्षता की थी और अपने अध्यक्षीय भाषण में सौन्दर्य के मानदंडों को बदलने का आह्वान किया था। एक साहित्यकार के गर्वबोध की

अभिव्यक्ति करते हुए उन्होंने कहा था कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। प्रेमचंद ने हमेशा साम्प्रदायिकता का पुरज़ोर विरोध किया और साम्प्रदायिक सद्भावना की वकालत की। उन्होंने अपने साहित्य और विचारों के ज़रिए अंधविश्वासों के विरुद्ध वैज्ञानिक चेतना समाज में फैलाई। 125 वर्षों बाद भी प्रेमचंद आज भी हमारे लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि वे अपने जीवनकाल में थे। सरकार से मेरी विनती है कि पूरे देश के पैमाने पर प्रेमचंद की 125वीं जयंती का पालन पूरी मर्यादा के साथ किया जाए। इसके लिए एक व्यापक कमेटी का गठन किया जाए और प्रेमचंद के साहित्य को सभी भाषाओं में सस्ती दरों पर सुलभ करवाने की व्यवस्था की जाए। लमही स्थित प्रेमचंद के घर को एक राष्ट्रीय स्मारक और संग्रहालय का रूप दिया जाए। प्रेमचंद के जीवन और कृतित्व पर एक फिल्म तैयार की जाए।

मैं समझती हूं कि पूरा सदन इसका समर्थन करेगा और माननीय मंत्री जी से मैं यह आग्रह भी करना चाहूंगी।

श्रीमती चन्द्रकला पांडे (पश्चिमी बंगाल): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं स्वयं को इससे सम्बद्ध करती हूं।

श्री गांधी आज़ाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी अपने आपको इससे सम्बद्ध करता हूं।

श्री बद्र नारायण पात्रि (उड़ीसा): सर, मैं इससे एसोसिएट करता हूं।

कुछ अन्य माननीय सदस्य: सर, हम भी अपने आपको इससे एसोसिएट करते हैं।

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING AND MINISTER OF CULTURE (SHRI S. JAIPAL REDDY): Mr. Vice Chairman, Sir, I thank the hon. Member for having raised the issue. I entirely endorse her suggestion. The Ministry of Culture is contemplating a befitting celebration of 125th Birth Anniversary of Munshi Premchandji, and we will try and incorporate all the ideas that she has mentioned in her brief presentation today.

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, प्रेमचंद पर, प्रेमचंद की कहानियों पर गुलज़ार ने एक टेलीविज़न सीरियल बनाया है और वह तैयार है। मंत्री जी से मेरा आग्रह होगा कि वह सीरियल टेलीकास्ट हो, कम से कम यह चिंता वे अवश्य कर लें। गुलज़ार ने प्रेमचंद जी की कहानियों पर जो सीरियल बनाया है, जिसकी हम लोगों ने बहुत अगुवाई की थी, वह जल्दी टेलीकास्ट हो, यह आग्रह हम अवश्य करना चाहेंगे आपसे।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Sir, I will take note of this suggestion. We will try and act upon that.